International Journal of Sanskrit Research 2024; 10(4): 149-152

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2024; 10(4): 149-152
© 2024 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 04-05-2024
Accepted: 05-06-2024

आराधना सैनी
शोध-छात्रा संस्कृत विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय,
दिल्ली, भारत

Corresponding Author:
आराधना सैनी
शोध-छात्रा संस्कृत विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय,
दिल्ली, भारत

ह्रस्वदीर्घ विषयक सूत्रों का भाषावैज्ञानिक अध्ययन

आराधना सैनी

प्रस्तावना

पाणिनीय व्याकरण अन्य व्याकरणों में अतिप्राचीन और सर्वांगपूर्ण माना जाता है। पाणिनीय व्याकरण में प्रक्रिया विशेष का अतिमहत्व है। प्रक्रिया विशेष के लिए पाणिनि ने सूत्रों का व्यवस्थित किया है। इसी क्रम में ह्रस्व और दीर्घ सूत्रों का भी विधान किया गया है। सम्पूर्ण अष्टाध्यायी में ह्रस्व और दीर्घ सूत्र अलग-अलग स्थान पर देखने को मिलते हैं जिसका कारण है- कहीं तो आचार्य ने सन्धि विशेष में ह्रस्वदीर्घ का विधान किया है कहीं समास प्रकरण में कहीं भ्वद्यदादि गणों में कहीं अजन्तादि में दीर्घ विधान किया है। ह्रस्व और दीर्घ एक प्रकार का ध्वनिपरिवर्तन ही होता है। सम्पूर्ण अष्टाध्यायी में ध्वनिपरिवर्तन के अनेक सूत्र देखने को मिल जाते हैं। परन्तु यहां केवल ह्रस्व और दीर्घ के रूप में होने वाले ध्वनि परिवर्तन को ध्यान में रखकर अध्ययन किया गया है। भाषाविज्ञान में यह ध्वनिपरिवर्तन विभिन्न प्रकार से होता है। भाषाविज्ञान में ध्वनिपरविर्तन की दिशाओं में कपिलदेव द्विवेदी ने समीकरण, विषमीकरण, आगम, लोप, वर्णविपर्यय, महाप्राणीकरण, अल्पप्राणीकरण, घोषीकरण, अघोषीकरण, अनुनासिकीकरण, ऊषमीकरण, सन्धिकार्य, मात्रा भेद के रूप में ध्वनिपरिवर्तन को दर्शाया गया है। सम्भवत :ध्वनिपरिवर्तन के ओर भी भेद हो सकते हैं परन्तु मेरी दृष्टि में सामान्यत :समस्त ध्वनिपरिवर्तन के चार भाग किये जा सकते है।

1. स्वरों के स्थान पर व्यंजन के रूप में ध्वनिपरिवतन।
2. व्यंजनों के स्थान पर स्वरों के रूप में ध्वनिपरिवतन।
3. स्वरों के स्थान पर स्वरों के रूप में ध्वनिपरिवर्तन।
4. व्यंजन के स्थान पर व्यंजन के रूप में ध्वनिपरिवतन।

इन चारों विभागों में प्राय :सभी प्रकार का ध्वनिपरिवर्तन समावेशित हो जाता है। अगर विभाग करने की ही बात आती है तो ध्वनिपरिवर्तन के अन्य विभाग भी किये जा सकते हैं जैसे -सम्प्रसारण के रूप में ध्वनि परिवर्तन। सन्धि के रूप में ध्वनि

परिवर्तन। गुण अथवा वृद्धि के रूप में ध्वनि परिवर्तन। ह्रस्व और दीर्घ के रूप में ध्वनि परिवर्तन इत्यादि।

1. **स्वरों के स्थान पर व्यंजन के रूप में ध्वनिपरिवर्तन-** इस विभाग के अन्तर्गत स्वरों के स्थान पर व्यंजन के रूप में ध्वनिपरिवर्तन दिखायी देता है। **इको यणचि**, **एचोऽयवायाव:** आदि सूत्र स्वरों के स्थान पर व्यंजन का ध्वनिपरिवर्तन करते हैं। यथा- प्रति एक: प्रत्येक:। इस उदाहरण में इ स्वर के स्थान पर य् व्यंजन का ध्वनिपरिवर्तन किया गया है। इसी प्रकार हरये में ए के स्थान पर अय् ध्वनिपरिवर्तन होता है।

2. **व्यंजनों के स्थान पर स्वरों के रूप में ध्वनिपरिवर्तन-** इस विभाग में व्यंजन वर्ण के स्थान पर स्वर वर्ण का ध्वनिपरिवर्तन दिखायी देता है। दिव उत्, अतो रोरप्लुतादप्लुते, हशि च आदि सूत्र व्यंजन वर्ण के स्थान पर स्वर वर्ण का ध्वनिपरिवर्तन करते हैं। यथा- दिव् भ्याम् में व व्यंजन वर्ण के स्थान पर उ स्वर वर्ण का ध्वनिपरिवर्तन किया गया है। इसी प्रकार रामोऽस्ति, रामो वन्द्य: में (:)र् के स्थान पर उ ध्वनिपरिवर्तन होता है।

3. **स्वरों के स्थान पर स्वरों के रूप में ध्वनिपरिवर्तन-** इस विभाग में स्वर वर्ण के स्थान पर स्वर वर्ण का ध्वनिपरिवर्तन दिखायी देता है। इस शोध-प्रबन्ध में ह्रस्व और दीर्घ के रूप में होने वाले ध्वनिपरिवर्तन को ही स्थान दिया गया है। चूंकि ह्रस्व और दीर्घ स्वरों के ही भेद हैं इसलिए शोध-पत्र का समस्त विषय प्राय: इसी विभाग में समाहित हो जाता है। प्वादिनां ह्रस्व:, अम्बार्थनद्योर्ह्रस्व:, तुजादीनां दीर्घोऽभ्यासस्य, प्रथमयो: पूर्वसवर्णे आदि सूत्र स्वर वर्ण के स्थान पर स्वर वर्ण का ध्वनिपरिवर्तन करते हैं। यथा- पुनाति में पू धातु के ऊ को ह्रस्व उ, हे अम्ब में अम्बा के आ को ह्रस्व अ, **तूतुजान:** में तुज् धातु के अभ्यास के उकार को दीर्घ ऊ, अग्नी में इकार को पूर्वसवर्ण दीर्घ ई ध्वनिपरिवर्तन होता है। इसी प्रकार बहुवचने झल्येत्, ओसि च इत्यादि अनेक सूत्र हैं जो दीर्घ (एकारादेश) करते हैं। एकार सन्ध्यक्षर है और सन्ध्यक्षर दीर्घ होता है क्योंकि उसके ह्रस्व नहीं होते हैं।

4. **व्यंजन के स्थान पर व्यंजन के रूप में ध्वनिपरिवतन-** इस विभाग में व्यंजन वर्ण के स्थान पर व्यंजन वर्ण का ध्वनिपरिवर्तन दिखायी देता है। समस्त हल् सन्धियां प्राय: इसी विभाग में आ जाती हैं। झलां जशोऽन्ते, खरि च, स्तो श्चुना श्चु:, ष्टुना ष्टु: आदि सूत्र व्यंजन वर्ण के स्थान पर व्यंजन वर्ण का ध्वनिपरिवर्तन करते हैं। यथा- सुबन्त में प को ब, जगदीश में त को द, सत्कार: में द को त, रामश्च में स को श, इष्ट में त को ट ध्वनिपरिवर्तन होता है।

काशिकाकार ने पृषोदरादीनि यथोपदिष्टम्।[1] सूत्र की व्याख्या में निरुक्त के पांच प्रकार का होने की बात कही है। .1वर्णागम .2वर्णविपर्यय .3वर्णविकार .4वर्णनाश .5धातु से अर्थान्तर का योग।[2] प्रारम्भ के चार वर्ग ध्वनिपरिवर्तन की ओर ही संकेत करते हैं। महाभाष्यकार ने इन चारों ध्वनिपरिवर्तन का सोदाहरण उल्लेख किया है। वर्णव्यत्यये -कृतेस्तर्क:, कसे : सिकता:, हिंसे :सिंह:। अपायो लोप -:हत :घ्नन्ति, घ्नन्तु, अघ्नन्। उपजन आगम -:लविता, लवितुम्। विकार आदेश -:घातयति, घातक:।[3] वर्ण विपयर्य -कर्त को तर्क, कसित को सिकता, हिंस को सिंह। वर्णलोप - हत :में न् का लोप, घ्नन्ति में हन् के अ का लोप। वर्णागम -लविता में इ का आगम। वर्णविकार -हन् को घातक, ह् को घ् के रूप में ध्वनिपरिवर्तन देखने को मिलता है।

ध्वनिपरिवर्तन होता क्यों है? इस प्रश्न का उत्तर डॉ0 कपिल देव द्विवेदी ने अपनी पुस्तक भाषाविज्ञान में इस प्रकार दिया है -परिवर्तन सृष्टि का नियम है। विश्व की प्रत्येक वस्तु में निरन्तर परिवर्तन होता रहा है, हो रहा है और होता रहेगा। इसको ही वैदिक ऋषि ने यत् किं च जगत्यां जगत्[4] कहा है। संसार की प्रत्येक वस्तु संसरणशील, परिवर्तनशील है। प्रत्येक भाषा की

ध्वनियों में भी निरन्तर परिवर्तन होता रहा है। इसी परिवर्तन के कारण एक-एक शब्द के अनेक अपभ्रंश हो जाते हैं -मनुष्य, मानुष, मानस, मनुस आदि।[5] इनका यह मत उचित प्रतीत होता है क्योंकि व्यवहारिक रूप से यह स्पष्ट दिखायी देता है।

ह्रस्व और दीर्घ विधायक सूत्रों के आद्योपान्त बोध के लिए अचश्च[6] सूत्र को जानना अत्यन्त आवश्यक है। जिसका अर्थ है- स्वसंज्ञा से विधान किये गये ह्रस्व, दीर्घ और प्लत, अच् के स्थान पर ही जानने चाहिए। अर्थात् अपनी संज्ञा से विधान किये गये ह्रस्व, दीर्घ और प्लुत अच् के स्थान पर ही होते हैं अन्य के नहीं। यथा - अतिरिकुलम्) अतिरै कुलम् (,अतिनुकुलम्)अतिनौ कुलम् (। इन उदाहरणों में नपुंसकलिंग की विवक्षा में ह्रस्वो नपुंसके प्रातिपदिकस्य[7] से अतिरि प्रातिपदिक को ह्रस्वादेश तथा अलोन्त्यस्य के नियम से अन्तिम वर्ण ऐकार को ह्रस्वादेश प्राप्त हुआ। ऐकार के ह्रस्व से सामान्यत :एकार का सन्देह भी हो सकता था क्योंकि एकार, ऐकार के अत्यधिक निकट है। लेकिन सन्ध्यक्षरों के ह्रस्व नहीं होते इस नियम से उपर्युक्त सन्देह व्यर्थ है। चूंकि सन्ध्यक्षरों को ह्रस्व करना था और सन्ध्यक्षरों के ह्रस्व होते भी नहीं है तो सन्ध्यक्षरों को ह्रस्व किया कैसे जाए, यह समस्या उत्पन्न हो गयी। इस समस्या के समाधान के लिए आचार्य ने एच् प्रत्याहर) सन्ध्यक्षरों (को ह्रस्व करने के लिए एक नवीन सूत्र का निर्माण किया एच :इग्ह्रस्वादेशे। इसके नियमानुसार ह्रस्वादेश करने में एच् प्रत्याहार के स्थान पर इक् प्रत्याहार ही होता है। स्थान, प्रयत्नादि मिलान से ऐ का निकटतम इ और औ का निकटतम उ है। अत :ऐकार और औकार के स्थान में क्रमश :इकार और उकार होकर अतिरिकुलम् और अतिनुकुलम् पद बनते हैं। इस प्रकार अपनी संज्ञा से विधान किये गए ह्रस्वादि अच्)स्वरों (के स्थान पर ही किये जाते हैं।

जहां आचार्य पाणिनि ने उत्, इत्, ईत् आदि कहकर)ह्रस्व/दीर्घ (आदेश किया है वहां यह ह्रस्वादेश अथवा दीर्घादेश प्राय :अच् के स्थान पर नहीं होता जैसे -दिव् भ्याम् स्थिति में दिव उत् सूत्र से दिव के स्थान पर उत्)उ (आदेश अलोन्त्यस्य[8] के नियम से अन्तिम अल् वकार के स्थान पर उ आदेश होता है। वस्तुत :उ ह्रस्व है परन्तु दिव उत् सूत्र में नाम लेकर ह्रस्व का विधान नहीं किया गया अत :ह्रस्व आदेश अच् से भिन्न हल् वर्णों के स्थान में भी हो जाता है। वस्तुत :ह्रस्व और दीर्घ विधान स्वरों के भेद हैं। परन्तु अनेक स्थलों पर आचार्य पाणिनि स्वरों के अतिरिक्त व्यंजनों को भी ह्रस्व अथवा दीर्घ करना चाहते हैं इसलिए ऐसे स्थलों पर आचार्य ने इत्, उत् और ईत् आदि का प्रयोग किया। उत् परस्यात:, ई घ्राध्मो:, घुमास्थागापाजहातिसां हलि आदि अनेक सूत्र हैं जो प्राय :ह्रस्व अथवा दीर्घ अलोन्त्यस्य के नियमानुसार अन्तिम अल् के स्थान में करते है। प्राय : व्यंजन वर्ण के स्थान पर इत्, उत् आदि का विधान किया जाता है परन्तु जहां स्वरों के स्थान पर इत् उत् आदि कहकर ह्रस्व/दीर्घ का विधान किया गया है वहां वह ह्रस्व/दीर्घ अपने स्वरवर्ण का ह्रस्व/दीर्घ नहीं करता अपितु अन्य स्वरवर्ण का ह्रस्व/दीर्घ करता है जैसे - जेघ्रीयते। इसमें ईत् कहकर किया गया दीर्घ आकार के स्थान पर किया है। यदि यहां ईत् कहकर दीर्घ न करते, नाम लेकर दीर्घ करते तो आ का दीर्घ आ ही होता जो आचार्य पाणिनि को इष्ट न था।

पाणिनि ने ह्रस्व और दीर्घ की परिभाषा देते हुए ऊकालोऽज्झ्रस्वदीर्घप्लुत:[9] सूत्र का कथन किया है। पाणिनि ने ह्रस्व को एकमात्रिक और दीर्घ को द्विमात्रिक बताया है। एकमात्रा वाले 'उ' के समान एकमात्रिक अच् को ह्रस्व नाम से कहा जाता है।यथा- दधि, मधु आदि। द्विमात्रा वाले 'ऊ' के समान द्विमात्रिक अच् को दीर्घ नाम से कहा जाता है। यथा- कुमारी, गौरी आदि। पाणिनि ने ह्रस्व को लघु की संज्ञा देते हुए ह्रस्वं लघु:[10] इस सूत्र का कथन किया है। पाणिनि इस सूत्र के द्वारा कहते हैं कि जो ह्रस्व अक्षर होता है उसी की लघु संज्ञा होती है। यथा- भिद् तृच् स्थिति में भिद् के इकार की लघु संज्ञा होने से ही पुगन्तलघुपधस्य च[11] सूत्र से लघु उपधा वाले अंग का सार्वधातुक/आर्द्धधातुक प्रत्यय परे रहते गुण होकर भेत्ता पद निष्पन्न होता है। यदि ह्रस्व की लघु संज्ञा न होती तो यहां प्रकृत सूत्र से गुण न होने से भेत्ता पद निष्पन्न न हो पाता। इसी प्रकार पाणिनि ने संयोगे

गुरु[12] सूत्र से संयोग परे होने पर ह्रस्व वर्ण की गुरु संज्ञा की है। यथा- कुण्डा। कुन्ड् अ टाप् कुन्ड् धातु में संयोग होने से गुरु संज्ञा है और गुरु संज्ञा होने से गुरोश्च हल:[13] सूत्र से अ प्रत्यय पुन: स्त्रीत्व का बोध कराने के लिए टाप् प्रत्यय होकर कुण्डा रूप निष्पन्न होता है।

उपर्युक्त चार भेदों पर सूक्षमता से विचार करने पर ज्ञात होता है कि ध्वनिपरिवर्तन को निम्नलिखित प्रकार से भी समझा जा सकता है।

अदुपध धातुओं को ध्वनिपरिवर्तन- अदुपध धातुओं से बनने वाली रूप संरचना में अ ह्रस्व को आ दीर्घ)वृद्धि (के रूप में ध्वनि परिवर्तन हो जाता है, ञित् और णित् प्रत्यय के परे रहते।उदाहरण -अक्षारीत्, अज्वालीत्।[14] अ क्षर् ई त् स्थिति में अतो ल्रान्तस्य[15] सूत्र से अकार के स्थान में वृद्धि होती है। इसी प्रकार ईघ्राध्मो:[16] सूत्र से आकार के स्थान में होने वाला ईकारादेश को ध्वनिपरिवर्तन का ही सूत्र समझना चाहिए।

अदन्त/आबन्त अंगों को ध्वनिपरिवर्तन- अदन्त और आबन्त अंग को भी ध्वनिपरिवर्तन दिखायी देता है। बहुवचने झल्येत्, ओसि च, आङि चाप:, सम्बुद्धौ च सूत्रों में अदन्त और आबन्त अंग को एकार आदेश करने का विधान है। यथा- राम भ्य: बहुवचने झल्येत्[17] से एकारादेश करके रामेभ्य: रूप निष्पन्न होता है। सन्ध्यक्षर ए दीर्घ वर्ण है इसलिए इन सूत्रों से अचों के स्थान पर दीर्घ एकादेश के रूप में ध्वनिपरिवर्तन समझना चाहिए।

पूर्व पद को ध्वनिपरिवर्तन- पूर्व पद को दीर्घ के रूप में भी ध्वनिपरिवर्तन दिखाई देता है। यथा- विश्व मित्र स्थिति में मित्रे चर्षौ।[18] सूत्र से ऋषिवाचक नाम होने पर मित्र उत्तरपद परे रहते विश्व को दीर्घ होता है। विश्वामित्र एक ऋषि हैं इसलिए मित्र परे होने पर विश्व की उपधा को दीर्घ होकर विश्वामित्र पद निष्पन्न होता है। इसके अतिरिक्त भी अष्टाध्यायी में अजन्त और हलन्त धात्वादि रूप में अनेक प्रकार से ध्वनिपरिवर्तन दिखायी देता है। यहां पर केवल ह्रस्व और दीर्घ के रूप में होने वाले ध्वनिपरिवर्तन पर ही विचार किया गया है।

इस प्रकार से उपर्युक्त विवेचना से स्पष्ट है कि ह्रस्व/दीर्घ विषयक ज्ञान भाषाविदों के लिए अत्यन्त उपादेय है। वस्तुत :ह्रस्व वर्ण को दीर्घ करना और दीर्घ वर्ण को ह्रस्व करना एकविध ध्वनिपरिवर्तन है। अगर सम्पूर्ण ध्वनिपरिवर्तन की बात करें तो ध्वनिपरिवर्तन बहुत विस्तृत है जिसमें स्वरों के स्थान पर स्वरों का ध्वनिपरिवर्तन, व्यंजनों के स्थान पर व्यंजन का ध्वनिपरिवर्तन तथा स्वरों के स्थान पर व्यंजनों का ध्वनिपरिवर्तन और व्यंजन के स्थान पर स्वरों का ध्वनिपरिवर्तन भी दिखायी देता है। परन्तु यहां पर स्वरों के स्थान पर स्वरों का ध्वनिपरिवर्तन दिखाया गया है क्योंकि ह्रस्व और दीर्घ का विधान स्वरों के स्थान में ही होता है। हां कुछ विशेष स्थल हैं जहां व्यंजन के स्थान पर स्वर के रूप में ध्वनिपरिवर्तन होता है ऐसा प्राय: अन्तस्थ (य् व् र् ल्) वर्ण के स्थान पर ही दिखायी देता है। यथा- दिव् भ्याम्=द्युभ्याम्)दिव उत् (यहां व्यंजन वर्ण वकार को उकार स्वर के रूप में ध्वनिपरिवर्तन देखने को मिलता है ।

सन्दर्भ सूची

1. अष्टाध्यायी। 6//3/109
2. वर्णागमो वर्णविपर्ययश्च द्वौ चापरौ वर्णविकारनाशौ। धातोस्तदर्थातिशयेन योग:स्तदुच्यते पंचविधं निरुक्तम्। पृषोदरादीनि यथोपदिष्टम्।6/3/109
3. महाभाष्य। नवाह्निक वार्तिक 67 पर।
4. यजुर्वेद। 40/1
5. भाषाविज्ञान। कपिलदेवद्विवेदी पृष्ठ 227
6. अष्टाध्यायी। 1/2/27
7. अष्टाध्यायी। 1/2/47
8. अष्टाध्यायी। 1/1/52
9. अष्टाध्यायी। 1/2/27
10. अष्टाध्यायी। 1/4/10
11. अष्टाध्यायी। 7/3/86
12. अष्टाध्यायी। 1/4/11
13. अष्टाध्यायी। 3/3/103
14. अतो ल्रान्तस्य। अष्टाध्यायी। 7/2/2
15. अष्टाध्यायी। 7/2/2
16. अष्टाध्यायी। 7/4/31
17. अष्टाध्यायी। 7/3/103
18. अष्टाध्यायी। 6/3/130